ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

हिन्दी का जासूसी कथा साहित्य : लुगदी साहित्य के विशेष संदर्भ में

सारांश

साहित्य और समाज के अंत : संबंध का आधार रचना की वह विषय– वस्तु है, जिससे मानवीय संवेदनाएं जुड़ी हुई है । अतः आजकल लिखे जा रहे जासूसी कथाओं को लुगदी या सस्ता साहित्य कहकर उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। लुगदी साहित्य कहकर जिन जासूसी रचनाओं को नकारा जाता है उनका आधार भी वही समाज है जिसका जिक्र आदर्श साहित्य के अंतर्गत किया जाता है। मुद्दा यह नहीं है कि रचना को किस कोटि में रखा जा रहा है बल्कि उन रचनाओं में उठाएं गए विषय वस्तु का समाज से क्या सम्बन्ध है, यह होना चाहिए। अतः जासूसी कथा साहित्य केवल गोपालराम गहमरी तक सीमित नहीं है उसकी व्यापकता का विकास यदि जानना है तो लुगदी साहित्य के प्रति ध्यान केन्द्रित करनी होगी, उसे बगैर किसी वजह के साहित्य की परिसीमा से निष्कासित नहीं किया जा सकता है। जिस उद्देश्य से सदियों पहले जासूसी उपन्यासों की वाहवाही थी आज भी उसी उद्देश्य की पूर्ति आन पड़ी है। हिन्दी साहित्य की भाषाई संकट को यूँही अनदेखा करना आने वाले भीषण संकट को न्यौता देना होगा। निष्कर्षतः हिंदी साहित्य की संवाद धर्मिता, उसकी विविधता को एहमियत देते हुए लुगदी साहित्य का अध्ययन किया जाना चाहिए। साहित्य का मूल धर्म यदि समाज कल्याण है तो उस समाज तक पहुंचने का सामर्थ्य भी उसमे होनी चाहिए और इस स्थिति में साहित्य को इसी तरह सस्ता कहकर खारिज करना समय के प्रतिकूल कदम उठाना होगा। जासूसी कथा साहित्य अभी भी रचे जा रहे हैं, जरूरत है तो बस अपने ध्यान को थोड़ा विस्तृत करने की। जासूसी कथा साहित्य हिंदी साहित्य का प्रमुख अंग है और यह बना रहेगा क्योंकि इसका माध्यम भले ही मनोरंजन हो पर उद्देश्य समाज कल्याण ही है।

पुष्पामल
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
विद्यासागर विश्वविद्यालय,
मिदनापुर, पश्चिम बंगाल

मुख्य शब्द : गुमशुदा , जासूसी कथा साहित्य, विमर्श की विखंडनवादी नीतियां, थोथी प्रसिद्धि, प्रतिस्थापित, गोपालराम गहमरी, पल्प फिक्शन, रचनाधर्मिता, कैनन डायल सस्ता साहित्य सामाजिक प्रतिबद्धता, शरदेंदु, सत्यजीत रे, इयान फ्लेमिंग, जेम्स हेडली, सुरेंद्र मोहन पाठक, वेद प्रकाश शर्मा, डिटेक्टिव फिक्शन, मायावी संसार, नैतिक आदर्श और मूल्य, सामाजिक सामंजस्यता।

प्रस्तावना

बहुत रोका है,'नाज्मी' पत्थरों ने
मगर पानी को रास्ता मिल गया।

आजकल हम सभी आधुनिक साहित्य के विमर्शों में इतने ज्यादा उलझ गए हैं कि जाने अनजाने अपने साहित्य के जड़ों को सींचना भूल रहे हैं। हमारे जड़े मजबूत रहेगी तो ही हम फल फूल पाएंगे। हिंदी साहित्य की छत्रछाया में आने वाली नई पीढ़ी का विकास सही ढंग से कर पाएंगे। अतः उक्त बातों पर यदि थोड़ा गंभीर होकर सोचा जाए तो गुमशुदा साहित्य के सन्दर्भ में जासूसी कथा साहित्य पर बात करना बहुत जरूरी है। जरुरी तो बहुत कुछ होता है पर आज के सन्दर्भ में इसकी आवश्यकता कुछ ज्यादा ही महसूस हो रही है और इसका सबसे प्रमुख कारण है हमारे चारों तरफ फैली हुई विमर्श की विखंडन वादी नीतियां । हम अपने ही साहित्य को न जाने कितने भागों में बाँट रहे हैं और यह बांटना सुविधा हेतु कदापि नहीं है य यह तो बस अपनी थोथी प्रसिद्धि को बरकरार रखने के लिए है। अब यह प्रश्न उठता है कि कैसे ? अर्थात क्यों यह हमारी सुविधा हेतु नहीं है। यथा, हिन्दी साहित्य के अब तक के इतिहास को कई भागों व कालों में विभाजित किया गया है ताकि पाठक क्रमानुसार हर एक काल और उसकी प्रवृत्तियों को जान सके। इस विभाजन के पीछे हम बड़े

आप छोटे का भाव बिल्कुल भी नहीं था पर अब जो हम कर रहे हैं निःसन्देह केवल अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए नहीं अपितु अपने अहम् भाव को सराखों पर प्रतिस्थापित करने के लिए कर रहे हैं।

गुमशुदा कौन होगा – वही न जिसका अपना एक अस्तित्व हो। क्या हमारे हिंदी के जासूसी कथा साहित्य का कोई अस्तित्व है जवाब होगा हाँ है। इसी जवाब से उभरता एक प्रश्न कि कहाँ? साहित्य में या पाठकों में ? यथा, 19वीं सदी के कथाकार गोपालराम गहमरी की कथाओं में या रेलवे स्टेशन के स्टाल में बिकने वाली पल्प फिक्शन नामक कथाओं में!

अध्ययन का उद्देश्य

साहित्य की परिकल्पना उसकी विविधता की भांति ही बहुत गंभीर और विस्तृत है और इसी व्यापकता को बरकार रखने के लिए उसके हर एक अंग को जीवित रखना आवश्यक है ताकि कोई यह न कहे कि अरे! साहित्य का यह रूप या अंग तो अब गुमशुदा हो गया है!साहित्य की सही पकड़ पाठक वर्गों के पास होती है और वे ही किसी भाषा के साहित्य की विविधता को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। ऐसी स्थिति में उन पाठक वर्गों की रुचि को नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिए। समाज में पाठकों के कई वर्ग हैं और जिस प्रकार वर्ग अलग है ठीक वैसे ही उनकी रुचियाँ भी अलग है और हिंदी का जासूसी साहित्य उसी का परिणाम है। बंगला और अंग्रेजी में जिस प्रकार के जासूसी रचनाएँ रचे जा रहे हैं, हिन्दी में भी वैसी रचनाएँ रची जा रही है पार्थक्य बस इतना है कि हिन्दी की जासूसी रचनाओं को सस्ता साहित्य या लुगदी साहित्य कहकर मुख्य धारा से अलग कर दिया गया है।

इस परिपत्र का उद्देश्य लुगदी साहित्य के नाम से हिंदी के जासूसी कथा साहित्य के प्रति बनी बनाई उपेक्षित दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए उसके विषय–वस्तु,शैली तथा उद्देश्य के आधार पर उसकी महत्ता को प्रतिस्थापित करना है।

गुमशुदा साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जो अब कहीं गुम हो गया है। आधुनिक साहित्य की प्रमुख धारा से इतर कहीं थम गया है। हिंदी साहित्य का कथा साहित्य अपने नाना रूपों में आदिकाल से लेकर अब तक अपने सृजनशील होने की गवाही है। हर काल की आबों हवा ने इसे सींचा हैं। इसके रूप को विस्तार दिया हैः पर आज की तारीख में उसके विस्तार को संकुचित किया जा रहा है। जिस विविधता को प्रेमचंद पूर्व के उपन्यासकारों ने अपनी रचना धर्मिता के माध्यम से निर्मित किया था, वह विविधता धीरे–धीरे लुप्त हो रही है।

हिन्दी के जासूसी कथा साहित्य का प्रारंभ प्रेमचंद पूर्व उपन्यासकार गोपाल राम गहमरी से मन गया है , जिन्हें हिन्दी का कैनन डायल कहा जाता है।

प्रेमचंद पूर्व के उपन्यासों को प्रमुखतः तीन वर्गों और कई उपवर्गों में बांटा गया है । यथा सामाजिक, ऐतिहासिक और घटनात्मक। यहाँ गुमशुदा साहित्य के सन्दर्भ में जासूसी कथा साहित्य को लिया गया है इसीलिए उसी से सम्बंधित उपवर्गों की चर्चा समीचीन होगी । यथा, घटनात्मक उपन्यासों के तीन उपवर्ग – ऐयारी–तिलिस्मी, जासूसी तथा साहसिक एवं अद्भुत घटनात्मक। इन तीनों वर्ग की रचनाओं में एक प्रमुख बिंदु प्रधान है और वह है घटना। एक ऐसी काल्पनिक घटना, जिससे यह पाठक के दिलों–दिमाग को रचना के आदि से लेकर अंत तक बाँध सके। आज फिर से 21वीं सदी के साहित्य को उसी बंधन की आवश्यकता है। जिसकी पूर्ति रोमांचकारी, रहस्यपूर्ण, साहसिक और अंतहीन जिज्ञासा के साथ पेश की गई जासूसी कथाएं। जिससे न केवल आनंद की प्राप्ति होती है, बल्कि बुद्धि का भी विकास होता है।

विश्व विद्यालय प्रकाशन से प्रकाशित हिंदी का गद्य साहित्य में 2012 तक के तकरीबन सभी गद्य विधाओं का उल्लेख है। जिसमें जासूसी कथा साहित्य का उल्लेख सिर्फ गोपालराम गहमरी के सन्दर्भ में हुआ है। हिन्दी उपन्यासों का विकास उपशीर्षक को मुख्यतः तीन वर्गों में बांटा गया है–प्रेमचंद–पूर्व हिन्दी उपन्यास, प्रेमचन्द–युगीन उपन्यास और प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास। ऐसे कौन से कारण हैं जिनकी वजह से आधुनिक जासूसी कथाएं हिन्दी साहित्य की प्रमुख धारा से इतर पल्प फिक्शन की धारा से जा मिली है। यहाँ पल्प फिक्शन से तात्पर्य उन कथाओं से है जिन्हें सस्ते किस्म के कागजों पर छापा जाता है और इस तरह के किताबो के आवरण बेहद आकर्षित करने वाले होते हैं। इनकी उपलब्धता हिन्दी के जाने माने प्रकाशन में नहीं अपितु रेलवे स्टेशन के स्टॉल में रहती है। पल्प फिक्शन का और एक पर्याय है सस्ता साहित्य। इस सस्ते साहित्य का अर्थ क्या है। यह सोचने वाली बात है कि किस सन्दर्भ में सस्ता, दाम में या उद्देश्य में।

प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यासकारों का एक ही प्रमुख लक्ष्य था हिन्दी का प्रचार–प्रसार और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रमुख तत्व थारूमनोरंजन और उसी के माध्यम से सामाजिक प्रतिबद्धता। एक प्रश्न की गुंजाइश है कि क्या सिर्फ हिंदी पाठकों की संख्या की वृद्धि के लिए ही प्रारम्भिक जासूसी कथाओं को साहित्य की प्रमुख धारा से जोड़ा गया था?क्योंकि प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में किसी भी ऐसे लेखक का जिक्र नहीं है जिसने अपने रचना का मुख्य बिंदु जासूसी कथानकों को बनाया है या न ही उनका जिन्होंने अपना पूरा जीवन जासूसी उपन्यास के ढेरों सीरीज लिखने में समर्पित कर दिया है।

अब दूसरा बिंदु। जासूसी कथानकों के प्रमुख चरित्र से सम्बन्धित है। हिंदी के जासूसी कथा साहित्य ने अब तक ऐसा एक भी पात्र या चरित्र को लोकप्रिय नहीं बनाया जिसने पाठकों का दिल जीता हो और वहीं, यदि बांग्ला और अंग्रेजी के जासूसी कथाओं की बात करे तो ऐसे कई चरित्र है, जिनसे हमारे हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी भी वाकिफ है,जैसे कि बांग्ला के शरदिंदु द्वारा रचित श्व्योमकेश बक्सीशः सत्यजीत रे का श्फेलूदाश और अंग्रेजी के इयान फ्लेमिंग का 'जेम्स बॉन्ड' पर हिन्दी के कोई नहीं। ऐसा नहीं है कि हिन्दी में कोई नहीं है। हिन्दी में भी बहुत सारे है, बस उनकी पहुँच उस रूप से पाठकों तक नहीं हो पाई है, जिस तरह बंगला और अंग्रेजी का हुआ है। हिन्दी के पल्प फिक्शन के प्रमुख जासूसी कथाकार हैं– सुरेंद्र मोहन पाठक और वेद प्रकाश शर्मा।

इनसाइक्लोपीडिया में इनकी पहचान 'सुरेन्द्र मोहन पाठक का जन्मः 19 फरवरी 1940 को हुआ। यह हिन्दी भाषा में लगभग 300 थ्रिलर अपराध उपन्यास लिखने वाले लेखक हैं। इन्होंने इयान फ्लेमिंग और जेम्स हेडली के कई उपन्यासों का हिन्दी भाषा में अनुवाद किया है। इनकी पहली कहानी है, '57 साल पुराना आदमी', जो 1959 में मनोहर कहानियां पत्रिका में प्रकाशित हुई थी और पहला उपन्यास ,'पुराने गुनाह नए गुनहगार (सुनील सीरीज) 1963 में नीलम जासूस पत्रिका के छपी थी। सुनील सीरीज से इनके 115 उपन्यास प्रकाशित हुए हैं तथा इसी सीरीज के माध्यम से डिटेक्टिव फिक्शन के क्षेत्र अपनी पहचान बना पाए। वे इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज में काम करते थे। इन्होंने अपने काम के साथ–साथे लिखने का शौक भी पूरा किया।

इनकी आधुनिक कालविधा है उपन्यास और कहानी और विषय है, अपराध कथा, रोमांच कथा तथा रहस्य कथा साहित्यिक। वे जासूसी उपन्यास के स्वर्ण युग आंदोलन से सम्बंधित हैं। इनकी प्रमुख कृतियां हैं। पैंसठ लाख की डकैती, दिन दहाड़े डकैती, मवाली, मीना मर्डर केस, असफल अभियान, खली वार, धमकी, जादूगरनी, तीन दिन। हिन्दी के प्रमुख न्यूज चौंनल 'आज तक' ने सुरेन्द्र मोहन पाठक को जासूसी किस्सों के बादशाह माना है, यह कहते हुए कि सामने ही उनके अगले थ्रिलर की पांडुलिपि पड़ी है और उस पर बड़े हर्फों में लिखा है रू सुरेन्द्र मोहन पाठक । यह सस्पेंस और थ्रिलर का मायावी संसार रचने वाला वह लेखक है जिसकी कोई भी किताब 40,000 से कम नहीं छपती और विमल सीरीज की उनकी 42 किताबें लगभग एक करोड़ से ज्यादा बिक चुकी हैं।..... इतनी कामयाबी के बावजूद 74 वर्षीय पाठक थोड़ी मायूस से कहते हैं 'हिंदी में राइटर की कोई हस्ती नहीं है।'[1].... इसी लेख में आगे नरेंद्र सैनी का कहना है कि यह उनकी कलम का जादू ही है कि जोधपुर के एक पाठक ने किसी केस की फाइल ही उन्हें भेज दी थी और कहा था कि पुलिस इसे सॉल्व कार्नर में नाकाम रही है। प्लीज आप इसे सॉल्व कर दे। वे अपना अगला नॉवेल पूरा कर चुके हैं, और नए नॉवेल पर काम शुरू कर दिया है। विमल सीरीज की उनकी किताब 65 लाख की डकैती 18 बार रिप्रिंट हो चुकी है।

इस किताब का 2009 में टाइम पत्रिका में जिक्र हुआ था और इसकी ढाई करोड़ प्रतियां बिकने की बात कही गई थी। पर मिस्ट्री के मास्टर को इस बात का रंज है कि हिन्दी में पल्प फिक्शन को वह सम्मान नहीं मिलता जैसा इंग्लिश में मिलता है। वे कहते हैं कि 'अंग्रेजी की किताब अगर 5000 बिक जाए तो उसे बेस्टसेलर कह देते हैं और हमारे काम को लुगदी साहित्य कहकर खारिज कर देते हैं। हमें अछूत बनाकर रखा गया है।'[2]

अनुभव से उपजी इस तरह के मनोभाव निःसन्देह एक ऐसे भयावह संकट का सूचक है, जिसका सामना आगे जाकर हमारे हिंदी साहित्य को करना पड़ सकता है, पर यह खुशी की बात है कि हमारे पास हर एक समस्या का समाधान है और इसका भी। इस तरह के कार्यों पर गंभीर रूप से चिंतन और शोध कार्य किया जाए। जिससे हमारे साहित्य की विविधता भी बनी रहेगी और इस तरह के नकारात्मक मनोभावों का विस्तार नहीं होगा।

सुरेन्द्र मोहन पाठक के सृजनलोक के कुछ लोकप्रिय चरित्र विमल सीरीज का विमल उर्फ सोहल, जुर्म की आंधी में पत्ते की तरह उड़ते, पनाह तलाश करते, निरंतर जुल्म के खिलाफ लड़ते महानायक की महागाथा। सात राज्यों में घोषित इश्तिहारी मुजरिज। दुश्मनों का दुश्मन और दीनों का सहारा। दुश्मनों का पुर्जा–पुर्जा काट डालने वाला जालिम जालिम, अपने जान को जोखिम में डालकर बेसहाराओं के लिए लड़ता है। विमल के सन्दर्भ में कहना है कि श्न भूतो न भविष्यति! थ्वमल'।[3] (www-smpathak-com/vimal-php)

अब मिलिए सुरेन्द्र मोहन पाठक के दूसरे प्रमुख नायक से सुनील सीरीज के सुनील, जो इनके सबसे ज्यादा पसंदीदा किरदार है। 'खीचों ना कमान को, ना तलवार निकालो जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो' पाठक साहब द्वारा रचित क्राइम रिपोर्टर प्रसिद्ध शायर अकबर इलाहाबादी की इन पंक्तियों को अक्षरशः सत्य करता और सत्यमेव जयते का नारा लगाता किरदार है। जब 1963 में पहली बार सुनील पाठकों से मुखातिब हुआ था, तो क्या प्रकाशक, क्या विक्रेता और क्या पाठक। सभी का यह मानना था कि डिटेक्टिव – फिक्शन की दुनिया जिसमें सीक्रेट एजेंट, प्राइवेट जासूस या पुलिस इंस्पेक्टर स्थापित और प्रमुख पत्र होते थे, एक पत्रकार का किरदार नहीं टिक सकता, नहीं टिकेगा। आज लगभग आधी सदी बीतने और 120 उपन्यासों के प्रकाशन के पश्चात, सुनील ला किरदार डिटेक्टिव–फिक्शन में नए प्रतिमान स्थापित कर चुका है। पिछले पांच दशकों के दौरान सुनील का ये किरदार, लाखों पाठकों के दिल और दिमाग पर अपनी अमिट छाप छोड़ चुके है। सुनील की प्रसिद्ध 'स्मार्ट टाक' को अनगिनत पाठकों ने ना केवल दिल से सराहा है, बल्कि अपने अंदाजे बयां में भी शामिल किया है।[4] (www-smpathak-com/sunil-php)

पाठक जी के तीसरे अनोखे व्यक्तित्व वाले किरदार सुधीर कोहली, जिसे इन्होंने 1980 में पहली बार पेश किया था। उस समय तक भारत में प्राइवेट जासूसी का व्यवसाय कभी चुकंदर और तंबाकू की तरह दुर्लभ मन जाता था। फिर भी सुरेन्द्र मोहन पाठक ने इसी व्यवसाय को केंद्र में रखते हुए सुधीर कोहली की रचना की। जो कि अपने आप में एक चुनौती था, जिसकी सुरेन्द्र मोहन पाठक जैसे लेखक से ही अपेक्षा की जा सकती थी।[5] (www-smpathak-com/sudhir-php)

जासूसी कथा लेखकों में वेद प्रकाश शर्मा का भी महत्वपूर्ण योगदान है। वेड प्रकाश शर्मा का जन्म 6 जून 1955 में मेरठ में हुआ और देहांत 17 फरवरी 2017, मेरठ में। ये हिन्दी के लोकप्रिय उपन्यासकार थे। इन्होंने अपने संपूर्ण जीवन में 179 उपन्यासों की रचना की है। इसके अतिरिक्त बॉलीवुड के प्रतिष्ठित कलाकार अक्षय कुमार के खिलाडी सीरीज की पटकथाएं भी लिखी हैं– सबसे बड़ा खिलाडी (1995) और इंटरनेशनल खिलाड़ी (1999)। इन्होंने अपनी लेखनी को आम बोलचाल की भाषा में पाठकों तक पहुँचायी है। एक सजग लेखक की भांति वे अपने आस–पास की घटनाओं से विषय वस्तु का चयन

करते हैं ना कि एक कमरे में बैठकर मनगढ़त कहानियां रचते हैं। वे स्वयं कहते हैं कि 'अखबारों और अपने इर्द–गिर्द की घटनाओं से विषय चुनता हूँ।'[6] (https://hi-m-wikipedia-org/wiki/osn–प्रकाश–शर्मा)

वेद प्रकाश शर्मा मुख्यतः जासूसी उपन्यास लिखते हैं। जैसे कि कलयुग की रामायण और वर्दीवाला गुंडा। इनके जासूसी उपन्यासों के प्रमुख पात्र हैं –

विजय, विकास, अल्फांसे, विभा जिंदल, केशव पंडित और रैना। टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार 1992 में रचित वर्दी वाला गुंडा ने अपनी पहली प्रकाशन में ही 15 लाख की बिक्री के साथ सारे रेकॉर्ड्स तोड़ दिए हैं, 'ब्रॉक आल रेकॉर्ड्स एंड सोल्ड 15 लाख कॉपीज ऑन द वेरी फर्स्ट डे ऑफ इट्स रिलीज'[7] (http://timesofindia-indiatimes-com/ city /meerut/famous&hindi&novelist&ved&prakash&sharma&dies&at&61/articleshow/57223609-cms) यह बात सिर्फ टाइम्स ऑफ इंडिया का कहना नहीं है, बल्कि द हिन्दू का भी यही कहना है कि आठ करोड़ से भी अधिक संख्या में बिक्री हुई है।[8] (http://www-thehindu-com/news/national/Hindi&novelist&Ved&Prakash&Sharma&dies/article17327485-ece)

2010 में जी टीवी में प्रसारित केशव पंडित, शर्मा जी के द्वारा रचित एक चरित्र पर आधारित था। लंग कैंसर की वजह से 2017 में 62 साल की उम्र में इनकी मृत्यु हो गई। इन्हें मेरठ रत्न पुरस्कार से दो बार (1992 और 1994)नवाजा जा चुका है। 1995 में नटराज अवार्ड और 2008 में राज्य स्तर के नटराज भूषण अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है।

निष्कर्ष

हिन्दी के जासूसी पल्प फिक्शन ने मनोरंजक ढंग से सामाजिक मुद्दों को अपने कथा साहित्य का विषय बनाया है, जैसे जनसेवक के लिए कार्यरत पुलिस का अवैध रूप से रिश्वत लेना या सामाजिक अन्याय व भेद–भाव की वजह से नई पीढ़ी का गलत राह चुनना तथा पत्रकार सुनील जैसे चरित्र का भी गठन किया गया है, जो अत्याचार का विरोधक और सत्य मेव जयते का रक्षक है। अतः इस तरह के रचनाओं पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है और ऐसे कारणों की पड़ताल होनी चाहिए, जिसकी वजह से लुगदी साहित्य को वह दर्जा नहीं दिया जा रहा है, जिसके वे हकदार है। साहित्य के आलोचक किसी विशिष्ट रचनाकार के दरबारी लेखक नहीं है और ना ही कोई प्रकाशन संस्था किसी प्रसिद्ध लेखक के डोनेशन से चलने वाली संस्था। इस बात को जितनी जल्दी हो सके मान ले और थोड़ा गंभीर रूप से इस विषय पर विचार विमर्श करे, वरना आने वाले अगले पांच वर्षों में हिन्दी के प्रमुख लेखक सिर्फ लुगदी साहित्य की कोटि में ही सिमट कर रह जाएंगे और सुरेन्द्र मोहन पाठक की भांति हमारे भावी लेखक भी यही कहेंगे कि हिन्दी में राइटर की कोई हस्ती नहीं है।... अंग्रेजी की कोई किताब अगर 5000 बिक जाए तो उसे बेस्टसेलर कह देते हैं और हमारे काम को लुगदी साहित्य कहकर खारिज कर देते हैं। हमें अछूत बनाकर रखा गया है।'

वस्तुतः हिन्दी साहित्य के विस्तार हेतु पाठकों के विस्तार की जरूरत है और यह मनोरंजन एवं आनंद के माध्यम से ही संभव है । जो कि मात्र एक साधन है साध्य नहीं।

मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में– केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।[9] (www-rachanakar-org/2016/03/blog&post_22-html\m=1)

हमारा साध्य तो बस एक ही है, नैतिक आदर्शों और मूल्यों के समुचित विकास के माध्यम से सामाजिक प्रतिबद्धता और सामाजिक सामंजस्यता की प्राप्ति। उम्मीद के साथ प्रणाम,

'नाव कागज की छोड़ दी मैंने
अब समंदर की जिम्मेदारी'!!

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *www-smpathak-com/vimal-php*
2. *www-smpathak-com/vimal-php*
3. *www-smpathak-com/vimal-php*
4. *www-smpathak-com/vimal-php*
5. *www-smpathak-com/vimal-php*
6. *https://hi-m-wikipedia-org/wiki/osn&çdk'k&'kekZ*
7. *http://timesofindia-indiatimes-com/city/meerut/famous&hindi&novelist&ved&prakash&sharma&dies&at&61/articleshow/57223609-cms*
8. *http://www-thehindu-com/news/national/Hindi&novelist&Ved&Prakash&Sharma&dies/article17327485-ece*
9. *www-rachanakar-org/2016/03/blog&post_22-html\m)1*